SURABHI - International Peer-Reviewed Referred Journal Vol-2 ISSN: 2349-4557

व्यंग्य साहित्य परंपरा मे डॉ. बापूराव देसाई का स्थान

प्रो. डॉ. जालिंदर इंगले
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य
महाविद्यालय, मनमाड, जि. नाशिक

'व्यंग्य' हिंदी साहित्य की एक वह विधा है, जैसे हिंदी साहित्य में उपन्यास, कहानी, काव्य, निबंध, नाटक, संस्मरण, रिपोर्ताज आदि के समान वह एक सशक्त विधा है। अर्थात हिंदी साहित्य गद्य और पद्य में विभाजित है। हिंदी के पद्य साहित्य में जैसे- महाकाव्य, खंडकाव्य, एकल काव्य, एकार्थ काव्य, कविता आदि प्रकार है, वैसे हिंदी गद्य साहित्य में उपन्यास, कहानी, नाटक के साथ-साथ व्यंग्य भी स्वातंत्र्योत्तर काल की एक नयी विधा है। हिंदी व्यंग्य साहित्य तो स्वतंत्रता पूर्व काल से लेखन में प्रचलित रहा, लेकिन शैली के रूप में! हिंदी के गद्य साहित्य में नाटक, निबंध, उपन्यास में एक शैली के रूप में व्यंग्य का प्रयोग भारतेंदु हरिश्चंद्र, हजारीप्रसाद द्विवेदी, केशवचंद्र वर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी, प्रेमचंद आदि ने खुलकर किया है।

स्वातंत्र्योत्तर काल में हिंदी साहित्य में व्यंग्य शैली के रूप में नहीं अपितु एक विधा के रूप में इसका प्रयोग होता रहा। विशेषतः 1970 के बाद तो व्यंग्य की बाढ़ सी आ गयी और लेखकों ने इतना व्यंग्य लिखा की हिंदी समीक्षकों के सामने यह जटिल प्रश्न रहा की इसे, कौन-सी साहित्य विधा मे रखा जाए? क्योंकि व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, डॉ.बरसानेलाल चतुर्वेदी, नरेंद्र कोहली, लतीफ घोंघी, डॉ. शंकर पुणतांबेकर, डॉ.बालेंदु शेखर तिवारी, डॉ.बापूराव देसाई आदि ने जो साहित्य लिखा; उसे न उपन्यास विधा, न कहानी विधा, न नाटक विधा में, न निबंध विधा में रखा जा सकता था। लेकिन वह ऐसा साहित्य था, जो काफी दमदार, सशक्त लिखा गया था। समग्र भारत वर्ष में यह बहस होती रही कि इस विसंगति पूर्ण साहित्य को, अन्याय-अत्याचार के खिलाफ लिखे गए साहित्य को साहित्य के किस विधा में रखा जाए? क्योंकि हिंदी साहित्य में शरद जोशी, हरिशंकर परसाई, नरेंद्र कोहली, लतीफ घोंघी, बरसाने लाल चतुर्वेदी, डॉ.शंकर पुणतांबेकर आदि ने जो साहित्य लिखा था उस समग्र साहित्य को एक स्वतंत्र व्यंग विधा मे, श्रेणी में रखने के लिए सुझाव दिया गया। ऐसे सिलसिलेदार व्यंग साहित्य का व्यंगकार तथा व्यंगसमीक्षक डॉ.बापूराव देसाई ने सन 1990 में हिंदी का गढ़ बिहार, झारखंड के राँची विश्वविद्यालय में प्रबंध लिखा, 'हिंदी व्यंग विधा: शास्त्र और इतिहास।' (1990) जिसपर डॉ.बापूराव देसाई जी को दुनिया की आखिरी उपाधि डी.लिट् से उद्घोषित किया गया।

अत: मैं डंके की चोट से यह कहना चाहती हूँ कि हिंदी साहित्य में व्यंग्य को एक विधा के रूप मे सर्वप्रथम डॉ.बापूराव देसाई ने प्रतिष्ठापित किया यही हिंदी व्यंग्य साहित्य में सबसे बडा योगदान है। यह अचरज की बात है कि अहिंदी भाषी व्यंग्य समीक्षक डॉ.बापूराव देसाई की व्यंग्य विधा को भारत सरकार के केंद्रिय हिंदी निर्देशालय, नई दिल्ली के निर्देशक डॉ. गंगाप्रसाद विमल, हिंदी साहित्य में नकेलवाद के जनक और पटना विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष एवं सांसद आचार्य डॉ.केसरीकुमार सिंह के समान भारत के सभी हिंदी व्यंग्यकारोंने तथा व्यंग्य को विधा के रूप में स्वीकृत कर हिंदी साहित्य में प्रतिष्ठापित किया गया। अर्थात इसका सारा श्रेय और प्रेय डॉ.बापूराव देसाई जी को है।

हिंदी व्यंग्य साहित्य में स्वातंत्र्योत्तर व्यंग्य विधा के विकास में योगदान देने वालों में प्रमुख हस्ताक्षर रहे- व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, रवींद्रनाथ त्यागी, केशवचंद्र, श्रीलाल शुक्ल, डॉ.नरेंद्र कोहली, के.पी. सक्सेना, लतीफ घोंघी, डॉ.बरसानेलाल चतुर्वेदी, मनोहर जोशी, प्रेमचंद के सुपुत्र अमृतराय, डॉ.संसारचंद्र, डॉ.शंकर पुणतांबेकर, डॉ.बालेंदु शेखर तिवारी, डॉ.बापूराव देसाई आदि व्यंग्य को सामर्थ्य प्रदान करनेवाले व्यंग्यकारों का बड़ा योगदान रहा है। इन सभी व्यंग्यकारों ने विशाल तथा तीक्ष्ण दृष्टि रखते हुए समाज में जहाँ - जहाँ अन्याय, अत्याचार, व्यभिचार, कथनी और करनी में अंतर, विसंगति, दुमुहाँपन, वेशर्मी, बेबनाव, अनैतिकता, पाखंड, अवसरवाद, भ्रष्टाचार आदि दिखाई दिया वहाँ- वहाँ कटाक्ष डालते हुए कुठाराघात किया है।

'व्यंग्य साहित्य परंपरा मे डॉ.बापूराव देसाई का स्थान' को लेकर सुभाष चंदर कहते है-